



श्री प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 21 अंक 1

कुल पृष्ठ-8

16 से 22 अप्रैल, 2026

दयानन्दाब्द 202

सृष्टि सम्वत् 1960853127

सम्वत् 2083

वै. क्र.-14

शिव शक्ति सिद्ध पीठ आश्रम तवाघाट, धारचुला जिला-पिथारौगढ़ में
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड का तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय शिविर हुआ सम्पन्न
सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी विशेष रूप से हुए सम्मिलित
शिविर का संयोजन श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने किया
सिद्ध पीठाधीश्वर स्वामी वीरेन्द्रानन्द जी महाराज ने अतिथियों का किया स्वागत



आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के तत्वावधान में जिला पिथौरागढ़ के धारचुला क्षेत्र के तवाघाट स्थित शिव शक्ति सिद्ध पीठ आश्रम में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय शिविर भव्य एवं सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस महत्वपूर्ण शिविर में भारत तथा नेपाल से आए आर्य प्रतिनिधियों ने देश की वर्तमान दिशा और दशा पर गंभीर मंथन किया तथा विचार-विमर्श के पश्चात् महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए "महात्मा नारायण स्वामी चार्टर" की घोषणा की।

इस चार्टर के अनुसार देवभूमि उत्तराखण्ड को नशामुक्त प्रदेश बनाने, जातिप्रथा एवं छुआछूत मुक्त प्रदेश बनाने तथा पशु बलि मुक्त प्रदेश बनाने का संकल्प लिया गया। शिविर में उत्तराखण्ड की प्रसिद्ध जनजाति, वनराजी या इसे वनरावत भी कहा जाता है के संरक्षण और उनके समग्र विकास के लिए आर्य समाज इस जनजाति के बच्चों को गोद लेगा तथा इनकी शिक्षा पूर्ण होने तक भोजन, आवास, शिक्षा से सम्बन्धित सभी व्यवस्थाओं को आर्य समाज स्वयं करेगा। इस जनजाति के बालक-बालिकाओं को आर्य समाज द्वारा संचालित गुरुकुलों एवं कन्या गुरुकुलों में निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जायेगी ताकि उन्हें आदर्श नागरिक के रूप में विकसित किया जा सके और उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके। इस महत्वपूर्ण अभियान को प्रभावी रूप से संचालित करने के लिए प्रसिद्ध समाजसेवक श्री गंगा सिंह पांगती के संयोजन में एक समिति का गठन किया गया, जो दूरस्थ वनवासी (वनरावत) जनजाति के लोगों में कार्य करेगी।

सम्मेलन में सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने पर भी विशेष बल दिया गया। निर्णय लिया गया कि आर्य समाज पूर्व



की भांति सामाजिक भेदभाव, अस्पृश्यता एवं छुआछूत जैसी कुप्रथाओं के उन्मूलन के लिए सतत कार्य करता रहेगा, जिससे समाज को विघटन और साम्प्रदायिकता से बचाया जा सके तथा समस्त मानव समाज में एकता और भाईचारे का वातावरण स्थापित हो।

भारत-नेपाल मैत्री संबंधों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से नेपाल के दारचूला में शीघ्र ही एक विशाल सम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किया गया। इस आयोजन के लिए भारत के धारचुला क्षेत्र में आर्य समाज के प्रधान आर्य नेता श्री लक्ष्मण सिंह कठायत तथा नेपाल के दारचूला में श्री नारायण स्वर्णकार को संयोजक की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में तथा मंत्री प्रो. विट्ठलराव ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने प्रेरणादायक विचार प्रस्तुत किए। इसके अतिरिक्त, भारत पंचदशनाम जूना अखाड़ा के महामंडलेश्वर स्वामी

बिरेन्द्रानन्द जी महाराज के विशेष सान्निध्य एवं उद्बोधन से उपस्थित प्रतिनिधियों को आध्यात्मिक एवं सामाजिक दिशा में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, मंत्री श्री शत्रुघ्न मोर्य, कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश मलिक, पूर्व प्रदेश प्रधान श्री मानपाल सिंह राठी, पूर्व सभा मंत्री श्री दयाकृष्ण काण्डपाल, श्री हाकम सिंह आर्य, श्रीमती कान्ता काम्बोज सहित विभिन्न जनपदों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। देहरादून, हरिद्वार, रुड़की, अल्मोड़ा, बागेश्वर, काण्डा, पिथौरागढ़ आदि

क्षेत्रों से आए प्रतिनिधियों ने भी सक्रिय सहभागिता निभाई। साथ ही श्री कुलदीप भण्डारी जैसे युवा शोधार्थियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष आयाम प्रदान किया।

इस शिविर में आए आर्य कार्यकर्ताओं ने शिविरार्थी के रूप में भाग लेकर इसे सफल बनाया। सर्वसम्मति से यह निर्णय भी लिया गया कि आगामी समय में उत्तराखण्ड की अस्थायी राजधानी देहरादून में एक भव्य अधिवेशन आयोजित किया जाएगा, जिसमें हजारों की संख्या में आर्यजन भाग लेंगे।

इस सम्मेलन का एक प्रमुख उद्देश्य महान संत महात्मा नारायण स्वामी को श्रद्धांजलि अर्पित करना भी था। दक्षिण भारत के आंध्र एवं कर्नाटक क्षेत्र से संबंध रखने वाले इस महान संत ने 1950-60 के दशक में अपनी कैलाश यात्रा के उपरांत उत्तराखण्ड के दुर्गम क्षेत्रों में शिक्षा एवं समाज सेवा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान दिया। उन्होंने बागेश्वर में अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, अल्मोड़ा में आर्य अनाथालय, काण्डा में छात्रावास, कमेड़ी देवी में संस्कृत महाविद्यालय, नारायण नगर (डीडीहाट) में बापू महाविद्यालय तथा शोसा में इंटर कॉलेज की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए। इसके अतिरिक्त, पिथौरागढ़ जिला चिकित्सालय में जर्मन एक्स-रे प्लांट की स्थापना भी उनके प्रयासों का परिणाम है।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि सभा मंत्री प्रो0 विट्ठलराव आर्य एवं आर्य प्रतिनिधि तेलंगाना और आन्ध्र प्रदेश के मंत्री श्री हरिकिशन वेदालंकार जी विशेष रूप से महात्मा नारायण जी के सम्बन्ध में अधिक जानकारीयें संकलित करने के उद्देश्य से पधारे थे ताकि वे यह जानकारी प्राप्त कर सकें कि महात्मा नारायण स्वामी मूल रूप से आन्ध्र प्रदेश के थे या कर्नाटक के थे। इसी उद्देश्य से शिविरार्थियों को तवाघाट

शेष पृष्ठ 4 पर



सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

अमृतसर की खूनी बैसाखी से भुब्ध हुए अमर शहीदों का बलिदान

- रामबिहारी विश्वकर्मा

अंग्रेज हमारे देश में व्यापारी के रूप में आये और भारत की जनता ने 'अतिथि देवो भव' की परम्परा के अनुसार इन व्यापारियों को सब प्रकार की सुविधाएं दीं। लेकिन धीरे-धीरे इन व्यापारियों ने देश में फूट डालकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके अपना कब्जा जमा लिया। 1857 में भारतीय सिपाहियों ने पहली बार विद्रोह करके भारत माँ को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया लेकिन वे विफल रहे। महाराष्ट्र में वासुदेव बलवन्त फड़के ने 1873 में युवा समाज का संगठन शुरू किया। जगह-जगह व्यायामशालाएं खोलीं। इस क्रान्तिकारी को राजद्रोह के आरोप में आजीवन कारावास की सजा दी गई लेकिन युवकों ने खासतौर पर गरमपंथी विचारधारा वाले युवकों ने यह निश्चय कर लिया कि इस देश को आजादी भीख मांगने से नहीं मिलेगी। उनका दृढ़ विचार था कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे।

भारत में अंग्रेजों ने तथाकथित शासन सुधार लाने के लिए लार्ड साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया था। यह कमीशन 3 फरवरी, 1928 को जब भारत पहुंचा तो पूरे देश में हड़ताल रखी गई। और जगह-जगह "साइमन गो बैक" के नारे लगाये गये। लाहौर में नौजवान भारत सभा के सदस्यों ने भी नारे लगाने की योजना बनाई। तत्कालीन पुलिस अधीक्षक स्काट ने असिस्टेंट सान्डर्स को रास्ता साफ करने की जिम्मेदारी सौंपी। लाहौर में लाला लाजपतराय और नौजवानों की टोली पर सान्डर्स ने लाठी बरसायी। लाला लाजपतराय को इतनी चोट लगी कि कुछ दिनों पश्चात् चोट के कारण उनकी मृत्यु हो गई। भगतसिंह ने इस दुखद घटना पर प्रस्ताव रखा कि लाला जी पर जो लाठियां बरसाई गयी हैं। उसी के कारण उनकी मृत्यु हुई है। इससे समूचे राष्ट्र का अपमान हुआ है। और नौजवान भारत सभा इस अपमान का बदला लेकर रहेगी। उन्होंने लाठी चलाने वाले पुलिस सुपरिटेण्डेंट स्काट को गोली का निशाना बनाने का निश्चय किया। लाला लाजपतराय की मृत्यु के एक महीने के बाद चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु और जयगोपाल ने पुलिस स्टेशन के सामने सान्डर्स को गोलियों से भून डाला। वे मारना तो चाहते थे स्काट को जिसने सान्डर्स को लाठी चार्ज का आदेश दिया था। लेकिन दोनों का आकार-प्रकार ऐसा था कि पहचानने में कुछ भूल हो गई और भ्रमवश उन्होंने सान्डर्स को मार डाला। इस तरह उन्होंने लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया। इन जवानों ने भारत माँ की बेड़ियां काटने के लिए अपने पैरों में बेड़ियां डाल लीं।

23 वर्ष की उम्र में भगत सिंह एक युगपुरुष बन गये थे। अपने खून से उन्होंने स्वतन्त्रता के जिस पौध कोसींचा वह विशाल वृक्ष बन गया। भगत सिंह को वीरता का यह सबक पुश्तैनी तौर पर प्राप्त हुआ था। एक बार जब वे छोटे थे और छोटे-छोटे तिनके जमीन में गाड़ रहे थे तो उनके पिता सरदार किशन सिंह ने पूछा कि बेटे तुम क्या कर रहे हो तो तुतलाती आवाज में भगत सिंह ने कहा कि बुबुके बो रहा हूँ। यानि बंदूके बो रहा हूँ। उनका परिवार पिछली दो पीढ़ियों से विदेशी सरकार के खिलाफ संघर्ष कर रहा था। ऐसे परिवार में भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारी विचारों वाले बालक का जन्म लेना स्वाभाविक ही था। भगत सिंह 10-11 साल की उम्र में ही बहुत ही चिन्तनशील हो गये थे। वह धर्म के गहन विषयों की आलोचना करने में सक्षम हो गये थे। 1919 में 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन अमृतसर क जलियांवाला बाग में एक सभा में करीब 20 हजार स्त्री-पुरुष, बच्चे इकट्ठे हुए थे। इसी बीच लैफ्टिनेंट सर ओडायर ने 100 हिन्दुस्तानी और 40 अंग्रेज सिपाहियों के साथ वहां प्रवेश किया। करीब 16 सौ राउण्ड फायर किये गये, जलियांवाला बाग में लाशें पट गई। उस समय भगतसिंह 12 वर्ष के थे। वह पढ़ने गये थे, लेकिन वह दृश्य देखकर उन्होंने खून से भीगी मिट्टी उठाई और माथे से लगाकर उसे एक छोटी सी शीशी में भर लिया। घर पहुंचने पर अपनी बहन को वह शीशी दिखाई और शीशी के चारों ओर फूल रखकर सिर झुकाया। 14 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और स्वतंत्रता के आन्दोलन में कूद पड़े। उनके अन्दर अद्भुत संगठन शक्ति तो थी ही, व्यवहार कुशल भी थे। इसी बीच 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर के चौरी चौरा स्थान पर लोगों की भीड़ ने थानेदार और सिपाहियों को थाने में बन्द करके

आग लगा दी। क्रान्तिकारियों के मन में यह निश्चय हो गया कि अंग्रेजों के कान बहरे हो चुके हैं। वे शान्ति की भाषा सुन नहीं पाते। बहरों को सुनाने के लिए ऊंची आवाज की जरूरत होती है इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों का ध्यान आकर्षित करने के लिए और उनके बहरे कानों में सुनाई देने लायक आवाज बुलन्द करने का निश्चय किया। उन्होंने एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई। एसेम्बली में 8 अप्रैल 1929 को वायसराय के फैसले की घोषणा की जाने वाली थी। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त खाकी कमीज और नेकर पहनकर वहां पहुंच गये। उन्होंने अखबार में लिपटा हुआ बम सरकारी बेंचों के पीछे खाली जगह पर फेंक दिया। उसके बाद दूसरा बम भी फेंका। उन्होंने पिस्तौल से दो गोलियां भी छोड़ी। दोनों वहां खड़े रहे और नारा लगाया इन्कलाब जिन्दाबाद दूसरा नारा गुंजा साम्राज्यवाद का नाश हो। उन्होंने एसेम्बली में पर्चे भी फेंके जिस पर अंग्रेजी में लिखा हुआ था, बहरों को सुनाने के लिए ऊंची आवाज की जरूरत होती है। बम फेंकने के बाद भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त आसानी से भाग कर बच सकते थे मगर वे शांत चुपचाप खड़े रहे। पुलिस जब उन्हें कोतवाली ले जाने लगी तो उन्होंने फिर नारा लगाया, 'इन्कलाब जिन्दाबाद' दूसरा नारा गुंजा 'साम्राज्यवाद का नाश हो।' भगत सिंह केवल क्रान्तिकारी ही नहीं थे वे अध्ययनशील और दार्शनिक विचारों वाले व्यक्ति थे। उनसे जब न्यायालय में पूछा गया कि क्रान्ति से आपका आशय क्या है तो उन्होंने कहा, क्रान्ति से हमारा प्रयोजन है अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन। उन्होंने आगे कहा, पूंजीपति, शोषक और समाज पर धुन की तरह जीने वाले लोग करोड़ों रुपया पानी की तरह बहाते हैं। वहीं दूसरी ओर शानदार महलों का निर्माण करने वाले लोग गन्दी बस्तियों में रहते हैं ऐसा समाज किस काम का? इसे बदलना होगा। भगत सिंह ने न्यायालय के समझ नई सामाजिक व्यवस्था की जो रूपरेखा दी वह बड़े-बड़े दार्शनिकों को भी सोचने के लिए बाध्य करती है कि इतनी कम उम्र में इस व्यक्ति ने गहन चिन्तन-मनन का समय भला कब निकाला होगा?

असेम्बली में विस्फोट के मूल में उद्देश्य अपने क्रान्तिकारी विचारों को लोगों तक पहुंचाना था। उनके वक्तव्य उस समय के प्रचलित अखबारों में प्रकाशित हुए, उनकी नई विचार पद्धति के साथ जोशीली भाषा और कष्ट झेलने के लिए आगे बढ़ना यह देखकर सारा देश उनके प्रति आकृष्ट हुआ। उन्होंने कहा था कि हम ये जानते हैं कि पिस्तौल और बम इन्कलाब नहीं लाते। इन्कलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है, हमने बम का धमाका करके यही प्रकट करना चाहा है। हमारे इन्कलाब का अर्थ पूंजीवाद और पूंजीवादी युद्धों के कष्टों को समाप्त करना है। उन्होंने न्यायाधीश के सामने स्पष्ट किया कि अगर बम फेंकने वालों का सही दिमाग न होता तो वे खाली जगहों की बजाय बेंचों पर बम फेंकते, लेकिन उन्होंने सही जगह चुनने की जो हिम्मत दिखाई है, उसके लिए उन्हें इनाम मिलना चाहिए। 12 जून 1921 को हुए असेम्बली बम कांड के मुकदमें में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास दिया गया। भगत सिंह जेल से ही अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनक्रान्ति करते रहे।

लम्बी भूख हड़ताल की। भगतसिंह ने कहा कि हम इस शर्त पर भूख हड़ताल तोड़ेंगे कि हम सबको एक साथ रहने का मौका दिया जाये। जेल अधिकारियों ने उनकी बात मान ली और उन्हें दाल और फुल्का दिया गया। उस समय भी उन्होंने अपनी जिद मनवाई। आजादी के इन दीवानों को देखने के लिए देश भर से लोग पेशी के दिन अदालत में जाते थे और वहां 'वन्देमातरम्' और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से आसमान गुंज उठता था।

लाहौर जेल में ही बटुकेश्वर दत्त, अजय घोष, जितेन्द्र सान्याल, यतीन्द्र नाथ दास भी रखे गये थे। इसी बीच सान्डर्स हत्याकाण्ड का मुकदमा भी 10 जुलाई 1929 से शुरू हुआ। भगत सिंह को हथकड़ी लगाने की जब बात हुई तो उन्होंने कहा कि एक क्रान्तिकारी को पुलिस के सिपाही के साथ हाथ बांध कर ले जाया जाये ये न्याय के खिलाफ है और उन्होंने भूख हड़ताल कर दी। न्यायाधीश जब कुर्सी पर बैठते थे तो चारों ओर नारे और राष्ट्रीय गीत गुंजने लगता था, "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। वक्त आने पर

बता देंगे तुझे ऐ आसमां। हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है"।

जिस समय मृत्यु की भयानक काली छाया मंडरा रही थी, उस समय भी आजादी के इन दीवानों की हंसी और अट्हास गुंजता रहता था। भगत सिंह कई बार ऐसा व्यंग्य छेड़ते थे या कोई ऐसा पेंचीदा सवाल उठा देते थे कि मजिस्ट्रेट भी चकरा जाते थे। मुकदमें की कार्यवाही 3 महीने तक चलती रही और दुनिया भर के मुकदमों के इतिहास में शायद लाहौर षड्यन्त्र केस ही ऐसा है जिसमें फैसला उस दिन सुनाया गया जिस दिन न अभियुक्त अदालत में हाजिर थे, न गवाह और न वकील। अदालत ने खुद आरोप लगाया और खुद ही फैसला दिया। फैसले में भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई गई, 7 को कालेपानी की सजा, एक को सात वर्ष की सजा और एक को तीन वर्ष की सजा दी गई। भगत सिंह को मृत्यु से तनिक भी भय न था, उन्हें न तो व्यक्तिगत चिन्ता थी और न कोई दुःख था।

भगतसिंह जेल में अध्ययन करते रहते थे। हर पत्र में वे पुस्तकों को ही मांग करते थे। पुस्तकों के साथ-साथ वह यहां तक लिख देते थे, कि पुस्तकालय के रजिस्टर में उस पुस्तक का कितना नम्बर है। उन्होंने चार्ल्स डिकेन्स, रीड मेम्सबेनी, गोर्की, मार्क्स, उमर खैयाम, आस्कर वाइल्ड, जार्ज बर्नार्ड शा और लेनिन आदि का गहन अध्ययन किया था। जब वे अपनी कोठरी में इधर से उधर घूमते थे तो कभी-कभी पुस्तकें छोड़कर मधुर स्वर में गा उठते थे, "माँ मेरा रंग दे बसन्ती चोला। इसी रंग में रंग के शिवा ने माँ का बंधन खोला।" उन्हें राष्ट्र और राष्ट्रवासियों की इतनी चिन्ता थी कि उसके सामने अपने कष्टों का कुछ ध्यान ही नहीं था, जेल में ही उन्होंने 'आत्मकथा', मौत के दरवाजे पर, समाजवाद का आदर्श और स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार जैसी पुस्तकें लिखीं। कुछ पुस्तकें तो छप गईं लेकिन कुछ नहीं छप पाईं। जेल में जब कोई मिलने आता था तो कभी-कभी वह कहते थे अगर मैं इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा देश के कोने-कोने तक पहुंचा सका तो समझूंगा कि मेरे जीवन का मूल्य मिल गया। उन्होंने जेल से युवकों के नाम सन्देश भेजा था जिसमें अपनी राजनीतिक विचारधारा को स्पष्ट किया था। उन्होंने अपने बारे में कहा था, यह बात प्रसिद्ध की गई है कि मैं आतंकवादी हूँ परन्तु मैं आतंकवादी नहीं हूँ, मैं एक क्रान्तिकारी हूँ जिसके कुछ निश्चित विचार-आदर्श और लम्बा कार्यक्रम है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम बम और पिस्तौल से कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। हमारा मुख्य लक्ष्य यह है कि मजदूरों और किसानों का संगठन हो।" भगतसिंह के बलिदान का क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहा था, वह प्रसन्नता और उत्सुकता के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था- "फिर जन्म लूँ और मातृभूमि की और सेवा कर सकूँ" मृत्यु के प्रति उनकी निर्भीकता को देखकर लगता था कि जैसे वह इन्सान नहीं फरिश्ता है। जब उनसे कहा गया कि आखिरी वक्त अपने वाहे गुरु का नाम ले लो और 'गुरुवाणी' का पाठ कर लो तो भगतसिंह ने कहा, "आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ तो वह कहेंगे कि यह बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद नहीं किया और मौत सामने नजर आने लगी है तो मुझे याद करने लगा है। लोग यही कहेंगे कि आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर इसके पांव लड़खड़ाए लगे।" जब फांसी की सजा दी गई तो भगतसिंह बीच में थे, अगल-बगल सुखदेव और राजगुरु थे। तीनों मिलकर साथ-साथ गाते हुए चलने लगे, दिल से निकलेगी ना मर कर भी वतन की उल्फत, मेरी मिट्टी से भी खुशबुए वतन आयेगी।

भगत सिंह ने मजिस्ट्रेट को देखकर कहा था 'आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको यह देखने को नसीब हो रहा है कि भारत के क्रान्तिकारी किस तरह खुशी-खुशी अपने उच्च आदर्शों के लिए मौत को गले लगाते हैं।' उनके पैरों पर न कंपकंपी थी, न चेहरे पर घबराहट। फांसी की फंदा पकड़कर उसे चूम कर तीनों ने एक साथ गर्जना की, "इन्कलाब जिन्दाबाद" साम्राज्यवाद मुर्दाबाद। उस समय शाम के सात बजकर 30 मिनट थे। इन तीनों क्रान्तिकारियों को समूचा देश उनकी निर्भीकता और राष्ट्रवाद की अदम्य भावना के लिए सदैव याद रखेगा।

(पूर्व निदेशक, आकाशवाणी केन्द्र, नई दिल्ली)

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

— देवेन्द्र कुमार शशिकर

ऋग्वेद का एक मन्त्र है— इन्द्रं वर्धन्तोऽपुनः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपधन्तोऽ रावणः। अर्थात् हे (अपुनः) अच्छे काम करने में निपुण लोगो ! (इन्द्रं) परम ऐश्वर्यवालों को (वर्धन्तः) बढ़ाते हुए (अरावणः) पापियों को (अपधन्तः) नाश करते हुए (विश्वं) सम्पूर्ण संसार को (आर्य) आर्य अर्थात् श्रेष्ठ (कृण्वन्तो) बनाओ।

जिन्होंने अच्छे कार्यों से अपने जीवन को अच्छा बना लिया है, ऐसे निपुण लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि पापियों का नाश करते हुए तथा परम ऐश्वर्यशक्तियों को बढ़ाते हुए सारे संसार को आर्य बनाओ।

इस मंत्र में मुख्यतः तीन बातें हैं। अच्छे कार्यों द्वारा अपने जीवन को सुन्दर बनाना, पापियों का नाश करना तथा परम ऐश्वर्यशक्तियों को बढ़ाना। इस प्रकार सारे विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाकर उच्चता के शिखर पर पहुँचाना।

प्रश्न उपस्थित होता है कि आर्य कौन है? आर्य शब्द जातिसूचक नहीं है। आर्य वह है जो मानवता के उच्च शिखर पर पहुँच चुका हो अथवा उस दिशा में प्रत्यनशील हो। जो सुसंस्कृत, शिष्ट, सदाचारी, ईमानदार, सत्यवादी, दयालु, परिश्रमी, विद्वान् तथा श्रेष्ठ पुरुषों के प्रति आदर बुद्धिवाला इत्यादि सदगुणों से युक्त हो। इस प्रकार आर्य शब्द वैयक्तिक तथा सामाजिक सदगुणों से युक्त एक विशेष प्रकार का नैतिक और समाजिक आदर्श का बोध कराता है। आर्य वह है जिसने अच्छे काम द्वारा अपने जीवन को सुन्दर बना लिया है। आर्य को सारे मानवीय गुणों को अपने जीवन में उतारना होता है। अतः सदगुणों से युक्त जो पुरुष है, वही आर्य है इसलिए आर्य शब्द का सबसे सुन्दर अर्थ 'श्रेष्ठ' है। आर्यसमाजी घराने में जन्म लेने मात्र से या अपने नाम के आगे 'आर्य' शब्द लगाने से वस्तुतः कोई आर्य (श्रेष्ठ) नहीं बन जाता। आर्य बनने के लिए सारे मानवीय उत्तम गुणों को धारण करना होता है।

अब प्रश्न होता है— आर्य बनने के साधन क्या है? मंत्र में कहा है— अपधन्तोऽरावणः अर्थात् इन्द्र को बढ़ाते हुए। इन्द्र शब्द की उत्पत्ति इदि परमैश्वर्य धातु से हुई है। इन्द्र को बढ़ाने का अर्थ है— परम ऐश्वर्य को बढ़ाना। ऐश्वर्य या परम ऐश्वर्य में कौन—कौन सी चीजें आती हैं? जब हम ऐश्वर्यों पर विचार करते हैं तो आर्य को सांसारिक धन — दौलत आदि की वृद्धि करनी चाहिए। धन के बिना व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र या विश्व का, किसी का भी काम नहीं चल सकता। धन के बिना न तो कोई सरकार चल सकती है और न कोई संस्था ही जीवित रह सकती है। गृहस्थियों का जीवन तो उसके बिना मृत्यु के समान है। साधु—संन्यासी, वानप्रस्थी, महात्मा तथा ब्रह्मचारी भी उसके बिना मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। इसलिए वेद में भी कहीं भी सांसारिक धन दौलत की निंदा नहीं की गई है। मानव जीवन में धन का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए वेद कहता है— अर्थ ह्यस्यतरणि। यह संसार एक विशाल समुद्र है। जिस प्रकार समुद्र को पार करने के लिए नाव की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार संसार रूपी सागर को पार करने के लिए धन की आवश्यकता है। प्रार्थना के मंत्रों में हम प्रतिदिन कहते हैं— वयं स्याम पतयो रयिणाम्। हे प्रभो ! हम धन—ऐश्वर्यों के स्वामी हों।

परन्तु यह धन आर्यत्व की वृद्धि करने वाला कब होगा? प्रार्थना के मंत्रों में कहा गया है— अग्ने नय सुपथा राये। हे अग्नि ! तू ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए हमें उत्तम मार्ग से ले चल। हम ईमानदारी और सच्चाई की कमाई का धन प्राप्त करें। क्योंकि यही धन हमारे शरीर, आत्मा, राष्ट्र और समाज का पोषण करने वाला है। वेद में स्पष्ट शब्दों में

कहा गया है— अग्निना रयिम श्नवत् पोषमेव दिवे दिवे। यशसं वीरवत्तमम्। हम अपने पुरुषार्थ के द्वारा ऐसे धन का अर्जन करें जो प्रतिदिन हमारे पोषण का कारण हो, हमें यश प्रदान करने वाला हो और पराक्रम प्रदान करने वाला हो। धन सचाई और ईमानदारी से कमाना चाहिए। परन्तु यह सांसारिक धन—दौलत परम ऐश्वर्य—अंतिम ऐश्वर्य नहीं है। वास्तव में मात्र इस ऐश्वर्य से आनन्द या शान्ति नहीं मिल सकती है। यह धन तो सांसारिक सुख का कारण हो सकता है। कहा गया है— सुखस्य मूलं धर्मः। धर्मस्य मूलमर्थः। अर्थात् सुख का मूल धर्म है और धर्म का मूल अर्थ है। धार्मिक कार्य अर्थ द्वारा किये जाते हैं। इन धार्मिक कार्यों को ध्यान में रखते हुए वेद कहता है— शत हस्त समाहर सहस्रहस्त संकिरः। अर्थात्, आर्य बनने के लिए, इन्द्र बनने के लिए धन आदि ऐश्वर्यों की उत्पत्ति करके उसका लाभ समाज को देने वाला” तेन त्यक्तेन भुज्जीथाः” वैराग्य भाव से भोग करो का मंत्र ध्यान में रखने वाला आर्य है। वह परम ऐश्वर्यशालियों को बढ़ानेवाला है।

आर्यत्व के लिए दूसरा ऐश्वर्य शारीरिक बल है। शारीरिक बल भी परम ऐश्वर्य है। उपनिषदों में शारीरिक बल की महिमा गाई गई है। छान्दोग्योपनिषद् में एक जगह कहा गया है कि एक बलवान मनुष्य आता है वह सैंकड़ों ज्ञानवालों को कंपा देता है—झुका देता है। बल न हुआ तो हम कुछ भी नहीं कर सकेंगे। नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः— यह परमात्मा बलहीन मनुष्यों को अप्राप्य है। शरीर में बल नहीं है, तो कुछ भी नहीं है। अपने शरीर को वज्र के समान कठोर बनाओ। अश्मानं तत्त्वं वृद्धि—अपने शरीर को पत्थर बनाओ। शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए नियमित और संतुलित आहार तथा आसन—प्राणायाम, तैरना, दौड़ना, खेलना, कूदना, टहलना, कसरत आदि नियमित व्यायाम करना चाहिये। यह शरीर जितना निरोग, सुन्दर और स्वच्छ होगा, पवित्र होगा उतना ही आत्मा का प्रकाश फैलेगा। इसलिए आर्यत्व के लिए शारीरिक बल प्राप्त करना आवश्यक है।

परन्तु इस बल की उपयोगिता क्या है? शारीरिक बल की पवित्रता और उपयोगिता है—दुर्बलों तथा असहायों पर क्रोद्ध मत करो, उन्हें सहारा दो, उनकी रक्षा करो।

आर्यत्व के लिए तीसरा ऐश्वर्य आत्मबल है। चाणक्य ने लिखा है—जितात्मा सर्वाथः संयुज्यते। आत्मवशी को कोई वस्तु अप्राप्य नहीं होती। आत्मबल परम बल है, बलों का बल है, वास्तविक बल है। इन्द्रियों में जो शक्ति है, वह आत्मा की ही है। यदि मनुष्य में आत्मबल न हो तो शारीरिक बल व्यर्थ

सिद्ध हो जाता है। कृशकाय व्यक्ति भी यदि आत्मबल से युक्त हो तो वह पराक्रमी और साहसी सिद्ध होते हैं।

हमें आर्य बनने के लिए आध्यात्मिक बल से युक्त होना होगा। आत्मिक बल की प्राप्ति के लिए हमें अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करनी होगी। रामायण में 'दशरथ' और 'दशमुख' दोनों पात्र दो व्यक्तियों के दो प्रतीक हैं। एक आर्यत्व का और दूसरा अनार्यत्व का। आर्य या अनार्य कोई जातियाँ नहीं हैं। दशरथ ने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर रखी थी। और दशमुख (रावण) अपनी इन्द्रियों के वश में था। जो अपनी इन्द्रियों को वश में रखता है, वह दशरथ है। इसके विपरीत जो अपनी इन्द्रियों का दास है, वह रावण है। जो व्यक्ति इन्द्रियों का स्वामी बन जाता है, वह आर्य हो जाता है, इन्द्र हो जाता है। प्रभात बेला में इन्द्र का आवाहन करो। उत्तम ज्ञान देने वाले यज्ञ में इन्द्र का स्मरण करो और अध्यात्मिक आनन्द की प्राप्ति के लिए इन्द्र का स्मरण करो तथा उसके गुणों को धारण करो। इन्द्र शक्ति अथवा आत्मबल के बिना अन्य सब बल निरर्थक है। इन्द्र शक्ति कार्यों से बढ़ती है। इन्द्रं बर्धन्ति कर्मभिः—इन्द्र शक्ति अर्थात् आत्मबल को कर्म से बढ़ाओ।

आत्मबल को समझने के लिए शरीर और आत्मा की अलग—अलग सत्ता को समझना चाहिए। जन्म शरीर का होता है आत्मा का नहीं। शरीर का बचपन, जवानी और बुढ़ापा आता है, पर इन भिन्न—भिन्न अवस्थाओं में भी जो एक रूप बना रहता है, वही तो आत्मा है। मृत्यु आत्मा की नहीं होती। आत्मा तो अजर—अजर है।

आत्मा को अमर देखने वालों में अनेक महान् व्यक्ति हुए हैं। सरदार भगत सिंह को जब सूली पर चढ़ाने के लिए ले जाया जा रहा था, तो उसका चेहरा उज्ज्वल हो उठा, उसका बजन बढ़ गया। उसके भीतर कोई हस्ती थी जो कहती थी कि यह शरीर सूली पर चढ़ेगा—आत्मा अमर रहेगा। राम प्रसाद बिस्मिल को जब फाँसी दी गई, उस समय उसके हृदय में प्रसन्नता, चेहरे पर तेज और मुख में 'ओं विश्वानि देव' मंत्रों की प्रार्थना थी। रोशन सिंह को जब फाँसी दी गई, उसके एक दिन पहले जेल में कसरत करते देखकर अंग्रेज सुपरिंटेंडेंट दंग रह गया और जाकर पूछा कि तुम कसरत क्यों कर रहे हो, कल तो तुम्हें फाँसी होगी? रोशन सिंह ने स्वाभाविक रूप से मुस्कुराते हुए कहा—आत्मा को आग नहीं जला सकती, पानी नहीं डूबा सकता, वायु नहीं सुखा सकती, शस्त्र नहीं काट सकते। मैं शक्ति के संस्कारों के साथ पुनर्जन्म लूंगा। यह है आत्मबल। संयोग से ये तीनों ही बलिदानी वीर आर्य समाजी थे। महर्षि दयानन्द को विष दिया गया। विष से रोम—रोम में आग लगी थी, परन्तु चेहरे पर वह दिव्य प्रकाश था जिसे देखकर गुरुदत्त विद्यार्थी जैसा नास्तिक व्यक्ति भी आस्तिक बन गया। इस प्रकार शरीर खोल है, आत्मा इस खोल के अन्दर की गिरी है। टूटता खोल है, मरता शरीर है। आत्मा नहीं मरती। शरीर का रूप बदलना मृत्यु है, आत्मा अमर है। इस तत्व को जो समझ लेता है, वह इन्द्र हो जाता है, आर्य हो जाता है। आर्य का अर्थ है—श्रेष्ठ, आर्य का अर्थ है—विशाल दृष्टि से देखने वाला, अनासक्त, विमोह। जब सारा संसार सांसारिक ऐश्वर्यों से पूर्ण होगा खाना, कपड़ा और मकान की समस्या नहीं रहेगी, शारीरिक, मानसिक, विद्या और ज्ञान की दृष्टि से हम सम्पन्न और सशक्त हो जायेंगे और आत्मिक बल से परिपूर्ण होकर सत्य और असत्य के निर्णय में समर्थ होंगे, तभी हम सच्चे अर्थों में आर्य बनेंगे और स्वयं आर्य बनकर संसार को आर्य बनायेंगे। यही है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सही अर्थ।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं

संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि — स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन — पृष्ठ 232 — मूल्य 100 रुपये

2. वैशेषिक दर्शन — पृष्ठ 248 — मूल्य 100 रुपये

3. न्याय दर्शन — पृष्ठ 240 — मूल्य 100 रुपये

4. सांख्य दर्शन — पृष्ठ 156 — मूल्य 80 रुपये

5. संस्कार विधि — पृष्ठ 278 — मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

“दयानन्द भवन” 3 / 5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष :- 011-424153 59, 23 274771

पृष्ठ 1 का शेष

शिव शक्ति सिद्ध पीठ आश्रम तवाघाट, धारचुला जिला-पिथौरागढ़ में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड का तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय शिविर हुआ सम्पन्न



से लगभग 65 किलोमीटर दूर नारायण स्वामी आश्रम ले जाया गया जहाँ महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने लम्बे समय तक तपस्या की थी। इस आश्रम की भव्यता देखते ही बनती थी और आश्रम के निर्माण के लिए आश्रम के व्यवस्थापक श्री प्रताप सिंह राणा ने बताया कि महात्मा नारायण स्वामी जी अल्मोड़ा से यहाँ आश्रम तक भवन निर्माण की सामग्री मंगवाने के लिए श्रमिकों को दोगुना पारिश्रमिक देते थे क्योंकि वे पैदल अपने सिर पर भार उठाकर यहाँ तक पहुँचाते थे। यहां तक आने में एक व्यक्ति को कम से कम 10 दिन लग जाते थे। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि इस आश्रम के निर्माण में नारायण स्वामी जी महाराज को कितना पुरुषार्थ एवं तप करना पड़ा होगा। नारायण स्वामी आश्रम में बैठकर शिविरार्थियों ने नारायण स्वामी आश्रम चार्टर तैयार किया और शिविर समापन पर उसकी घोषणा की गई।



समग्र रूप से यह शिविर न केवल सामाजिक जागरूकता और सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ, बल्कि इसने शिक्षा, समरसता और मानव कल्याण के प्रति आर्य समाज की प्रतिबद्धता को भी सशक्त रूप से प्रदर्शित किया।

शिविर के समापन सत्र में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सभा मंत्री प्रो० विट्ठलराव आर्य जी, प्रान्तीय सभा के अध्यक्ष डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा जी, मंत्री श्री शत्रुघ्न मोर्य जी एवं शिविर संयोजक श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी आदि ने शिविर के शिविरार्थियों को सम्बोधित किया। शिविर में लिये गये निर्णयों को निष्ठा के साथ क्रियान्वित करने का संकल्प दिलवाया। श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने जहाँ सभी शिविरार्थियों का आभार प्रकट किया वहीं सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं मंत्री प्रो० विट्ठलराव आर्य व शिव शक्ति सिद्ध पीठ आश्रम के अध्यक्ष महामण्डलेश्वर स्वामी विरेन्द्रानन्द जी महाराज का विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि पहाड़ के इस दुर्गम स्थान पर शिविरार्थियों के लिए सभी समुचित व्यवस्थाएं भोजन, आवास एवं यातायात की व्यवस्था करना अत्यन्त कठिन कार्य होता है किन्तु स्वामी विरेन्द्रानन्द जी महाराज ने बड़ी उदारता के साथ शिविर के लिए न केवल स्थान दिया अपितु अन्य सभी व्यवस्थाएं उपलब्ध कराई इसके लिए हम उनका हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

इस अवसर पर क्षेत्र के लगभग एक सौ परिवारों को खाद्य सामग्री भी वितरित की गई। जिसकी व्यवस्था उत्तराखण्ड सरकार के पूर्व मंत्री एवं युवा आर्य संन्यासी स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज तथा सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो० विट्ठलराव आर्य एवं श्री हरिकिशन वेदालंकार मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना+आन्ध्र प्रदेश आदि ने की। आदिवासी गरीब परिवारों में खाद्य सामग्री वितरण हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना की ओर से एक लाख रुपये तथा स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने भी एक लाख रुपये प्रदान की। स्वामी जी ने अपने प्रतिनिधि के रूप में श्री हाकम सिंह आर्य को खाद्य सामग्री वितरण के लिए भेजा। शिविर समापन के अवसर पर स्थानीय निवासियों को सत्यार्थ प्रकाश भी भेंट किये गये।

आर्य समाज वनराजी (वनरावत) जनजाति को गोद लेगा

पिथौरागढ़ में आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस में

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की घोषणा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के तत्वावधन में आयोजित तीन दिवसीय (3, 4, 5 अप्रैल, 2026) में भाग लेने के लिए दिल्ली से पधरे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मंत्री प्रो० विट्ठलराव आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के मंत्री श्री हरिकिशन वेदालंकार ने पिथौरागढ़ प्रवास के दौरान विविध कार्यक्रमों में भाग लिया। 2 अप्रैल को दोपहर 1 बजे पिथौरागढ़ जिला बॉर एसोसिएशन द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये और कहा कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही राष्ट्र

निर्माण के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करता आ रहा है। देश की आजादी के आन्दोलन से लेकर शिक्षा के क्षेत्र तक आर्य समाज ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान समय में आर्य समाज सप्तक्रांति के लिए देशव्यापी अभियान चला रहा है। इसी उद्देश्य से पिथौरागढ़ जिले के धारचुला क्षेत्र में स्थित शिव शक्ति सिद्ध पीठ आश्रम में एक तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें सप्तक्रांति के बिन्दुओं पर गहन चर्चा की जायेगी और उत्तराखण्ड प्रदेश तथा अन्य सभी प्रदेशों के लिए कार्य योजना तैयार की जायेगी। स्वामी आर्यवेश जी ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान को आर्य समाज द्वारा प्रारम्भ किया गया अभियान बताया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2005 में सर्वप्रथम भारत में कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध बेटी बचाओ अभियान आर्य समाज ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मस्थल टंकारा से प्रारम्भ किया था जिसका समापन अमृतसर के जलियावाला बाग में हुआ था। इसी अभियान को कालान्तर में देश की केन्द्र सरकार ने अपना मुख्य कार्यक्रम बनाया। अतः आर्य समाज सदैव ज्वलन्त एवं सामयिक विषयों पर अपनी पैनी नजर रखता है और समाज को उस विषय पर आन्दोलित करने का कार्य करता है।

जिला बॉर एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री रमेश एडवोकेट तथा अन्य पदाधिकारियों ने सभी अतिथियों का वकीलों की ओर से स्वागत किया। इस अवसर पर श्री गोविन्द सिंह भण्डारी एडवोकेट, डॉ. तारा सिंह एवं श्री जय प्रकाश देवलाल भी उनके साथ थे। पिथौरागढ़ के होटल गोल्ड पैटल्स में पत्रकार वार्ता को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि तवाघाट सिद्ध पीठ आश्रम में महामण्डलेश्वर स्वामी विरेन्द्रानन्द गिरी जी महाराज के आमंत्रण पर तीन दिवसीय शिविर का सफल आयोजन सम्पन्न हुआ है। शिविर में निश्चय किया गया है कि आर्य समाज वनराजी (वनरावत) जनजाति के बच्चों के भविष्य को संभालने के लिए महत्वपूर्ण पहल करेगा। आर्य समाज वनराजी (वनरावत) जाति के बच्चों को गोद लेकर उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करेगा ताकि वे मुख्यधारा से जुड़ सकें और आत्म निर्भर बन सकें।

सभा मंत्री प्रो० विट्ठलराव जी ने महात्मा नारायण स्वामी जी के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वे एक तेजस्वी संन्यासी थे जो दक्षिण भारत से मुख्यतया पुराने आन्ध्र प्रदेश से यहाँ आये और यहीं के होकर रह गये। मेरी जिज्ञासा है कि नारायण स्वामी जी महाराज के जीवन के उन पहलुओं की जानकारी इकट्ठी की जाये जो अभी तक अज्ञात हैं। मेरा मानना है कि वे आर्य समाज के संगठन से तो नहीं जुड़ पाये किन्तु विचारधारा की दृष्टि से वे आर्य विचारधारा के पोषक एवं प्रवक्ता थे। इसीलिए उन्होंने कई स्थानों पर आर्य संस्थाएँ खड़ी की। उनके द्वारा बनाई गई संस्थाओं को देखकर उनकी दूरदृष्टि और विशाल व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। हमारी यह यात्रा पूरी तरह से सफल रही क्योंकि हमने महात्मा नारायण स्वामी जी के कार्य क्षेत्र को अपनी आंखों से देखा और हम अत्यन्त प्रभावित हुए। जहाँ तक आर्य समाज की बात है, आर्य समाज प्रारम्भ से ही समाज में समरसता, समानता, सौहार्द का पक्षधर रहा है। उत्तराखण्ड प्रदेश में भी आर्य समाज इस अभियान को तेज करेगा और यहाँ कि विलुप्त होती जा रही जनजाति वनराजी (वनरावत) को गोद लेकर उसके विकास के लिए कार्य करेगा।

प्रेस वार्ता में डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा, श्री मानपाल सिंह राठी, श्रीमती कान्ता कम्बोज, श्री हरिकिशन वेदालंकार, डॉ. तारा सिंह, श्री जयप्रकाश देवलाल, होटल के मालिक श्री संदीप आदि भी उपस्थित रहे। पिथौरागढ़ में स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य सभी आर्य नेता स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी से कुटी में जाकर मिले और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। पिथौरागढ़ प्रवास के दौरान होटल में विशेष यज्ञ का अनुष्ठान भी किया गया जिसमें अन्य लोगों ने भी भाग लिया। अपने इस पिथौरागढ़ प्रवास के दौरान चौकोड़ी स्थित हिमालयन पुल में भी स्वामी आर्यवेश जी, प्रो० विट्ठलराव आर्य जी, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी आदि और स्कूल के प्रबन्धक श्री चन्द्र प्रकाश कार्की तथा उनके सहयोगियों से भेंट की। मौसम प्रतिकूल होने के कारण चौकोड़ी से प्रतिनिधि मण्डल पिथौरागढ़ लौट गया।



आर्य समाज सेवासदन बल्लभगढ़ के तत्वावधान में चतुर्वेद शतकम् यज्ञ, भजन एवं पावन वेदकथा भव्यता के साथ हुई सम्पन्न सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति



आर्य समाज सेवा सदन, बल्लभगढ़ के तत्वावधान में दिनांक 25 से 29 मार्च, 2026 तक ब्राह्मण वाड़ा, बल्लभगढ़ स्थित आर्य समाज सेवा सदन में चतुर्वेद शतकम् यज्ञ, भजन एवं पावन वेदकथा का आयोजन अत्यंत श्रद्धा, उत्साह एवं वैदिक मर्यादा के साथ सम्पन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर समापन सत्र में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में पधारे। उनके अतिरिक्त आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री (आगरा), श्रीमती सविता आर्या (मथुरा), श्री बच्चू सिंह आर्य—मथुरा तथा श्री उदय शास्त्री (पुरोहित, आर्य समाज सेवा सदन) सहित अनेक विद्वान एवं आर्यजन उपस्थित रहे। मंच संचालन का दायित्व श्री रघुवीर शास्त्री जी ने अत्यंत कुशलता एवं गरिमा के साथ निभाया।

दिनांक 25 से 28 मार्च तक प्रतिदिन प्रातः 7:30 बजे से 10:00 बजे तक तथा सायं 8:00 बजे से 10:00 बजे तक यज्ञ, भजन एवं वैदिक प्रवचन का क्रम नियमित रूप से चलता रहा। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन दोपहर 3:00 बजे से 5:30 बजे तक आर्य समाज, चावला कॉलोनी, बल्लभगढ़ में पारिवारिक सत्संग का आयोजन भी किया गया।

दिनांक 26 मार्च को श्रीराम नवमी का पर्व विशेष श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया, जबकि 27 मार्च को महिला सम्मेलन का आयोजन अत्यंत प्रेरणादायक एवं भव्य रूप में सम्पन्न हुआ।

29 मार्च को समापन सत्र में अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब तक मनुष्य अपने जीवन में समर्पण, सेवा, परोपकार और त्याग की भावना को व्यवहार में नहीं उतारता, तब तक यज्ञ का वास्तविक फल

प्राप्त नहीं होता। उन्होंने स्पष्ट किया कि “इदम् मम” यज्ञ का प्राण है तथा “स्वाहा” उसकी आत्मा है। जिस प्रकार शरीर में प्राण और आत्मा का अभिन्न संबंध होता है, उसी प्रकार यज्ञ करते समय इन भावों का अन्तःकरण में अनुभव होना आवश्यक है। उन्होंने आगे बताया कि यज्ञ में यजमान का संकल्प ही अग्नि है। जैसे भौतिक अग्नि के बिना अग्निहोत्र संभव नहीं, उसी प्रकार ब्रह्मयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ आदि सभी यज्ञ संकल्परूपी अग्नि के बिना पूर्ण नहीं हो सकते। यदि संकल्प दृढ़ एवं प्रखर हो, तो सभी यज्ञीय कार्य सफल होते हैं; परन्तु संकल्प की दुर्बलता से श्रेष्ठ कार्य भी अपूर्ण रह जाते हैं। वर्तमान समय में यही स्थिति दृष्टिगोचर होती है कि संकल्प की कमी के कारण मनुष्य यज्ञीय जीवन से विमुख हो रहा है।

समापन सत्र में चौ0 राजेन्द्र सिंह बिसला एवं श्री देशबन्धु आर्य (पांच भाई साबुन वाले) की गरिमामयी उपस्थिति रही। इनके अतिरिक्त श्री महेश चन्द्र अग्रवाल, श्री गणेशदत्त आर्य, श्री रघुवीर शास्त्री आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित थे।

इस सफल आयोजन में आर्य समाज सेवा सदन के प्रधान श्री

जितेन्द्र सिंह आर्य, मंत्री श्री ललित गोयल, कोषाध्यक्ष श्री चन्द्रभान भुटानी एवं समस्त सदस्यगण एवं कार्यकर्ताओं ने विशेष परिश्रम एवं समर्पण के साथ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संरक्षक मंडल के रूप में श्री सत्यदेव गुप्ता, श्री सोम प्रकाश आर्य, श्री सुभाष मदान, श्री रामावतार आर्य, श्री सुभाष आर्य, श्री देव सिंह नेगी, डॉ. प्रताप सिंह तथा श्री सुरेश रावल ने भी अपना स्नेह एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।

अतिथियों के स्वागत एवं व्यवस्था में सर्वश्री धर्मवीर रावल, अशोक सेठी, रमेश नंगला, बालकृष्ण शास्त्री, रामकिशोर गोयल, सुशील शास्त्री, दयानन्द आर्य, राजकुमार यादव, देवदत्त डकोरिया, जितेन्द्र सिंघल, मुकेश आर्य, प्रवीण गोयल, जयप्रकाश सिंघल, श्रवण कुमार, रविन्द्र सिंह, प्रदीप नंगला, दिनेश नंगला, भारत दर्शन आर्य, पवन गर्ग, सन्दीप नंगला, राजेश आर्य, कपिल आर्य, राजेन्द्र सिंह, उमेश अग्रवाल (सी.ए.), देवरतन गोयल आदि ने सराहनीय सहयोग प्रदान किया।



सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी के सुपौत्र एवं श्री प्रवीण त्यागी के सुपुत्र श्री विभोर त्यागी एवं श्रीमती प्राप्ति त्यागी का नवगृह प्रवेश यज्ञ दिनांक 20 मार्च, 2026, समय—प्रातः 11 बजे



सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी के सुपौत्र एवं श्री प्रवीण त्यागी के सुपुत्र श्री विभोर त्यागी एवं श्रीमती प्राप्ति त्यागी के नोएडा स्थित नये घर में गृह प्रवेश यज्ञ का विधिवत आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गुरुबचन शास्त्री गुरुकुल बरनावा, उत्तर प्रदेश रहे तथा सभा

प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने परिवारजनों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का संक्षिप्त उपदेश भी युवा दम्पति के लिए हुआ और पं० माया प्रकाश त्यागी जी ने भी अपना संक्षिप्त आशीर्वाद प्रदान किया। यह कार्यक्रम पारिवारिक था और इसको वैदिक विधि से सम्पूर्ण

किया गया था। गृह प्रवेश की सभी विधि पूर्ण होने के उपरान्त प्रीति भोज की भी व्यवस्था की गई थी। विभोर जी एवं प्राप्ति जी ने सभी विद्वानों को दक्षिणाएँ प्रदान कर सम्मानित किया और उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया।

स्वामी व्रतानन्द जी महाराज के मथुरा निवास पर उनकी स्व० धर्मपत्नी श्रीमती रानी देवी की स्मृति में यज्ञ का आयोजन सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी यज्ञ में पहुंचे

मथुरा निवासी श्री सूबेदार भीष्मदेव आर्य (वर्तमान में स्वामी व्रतानन्द सरस्वती) की सहधर्मिणी श्रीमती रानी देवी जी की स्मृति में 8 मार्च, 2026 को मथुरा निवास पर स्मृति यज्ञ किया गया जिसमें सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त गुरुकुल वृन्दावन के रजिस्ट्रार श्री राजेश यादव एडवोकेट भी विशेष रूप से यज्ञ



में सम्मिलित हुए। स्वामी व्रतानन्द जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री आदित्येन्द्र आर्य एवं पुत्रवधु श्रीमती आशा देवी आर्या यजमान बने और उनके पौत्र युवराज सिंह एवं पौत्री नयना सिंह भी यज्ञ में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपना संक्षिप्त उपदेश भी दिया और दिवंगत माता जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आंतों में मल का चिपकना गम्भीर समस्या का संकेत

— घनश्याम मुरारी



आंतों में मल का चिपकना आज के समय में एक आम लेकिन गंभीर समस्या बनती जा रही है, जो मुख्य रूप से गलत खानपान, तनावपूर्ण जीवनशैली, आधुनिकता से परिपूर्ण जीवनशैली और प्राकृतिक नियमों की अनदेखी के

कारण उत्पन्न होती है। जब हमारा पाचन तंत्र सही ढंग से कार्य नहीं करता, तो भोजन पूरी तरह पच नहीं पाता और उसका अवशेष मल के रूप में आंतों में रुकने लगता है। धीरे-धीरे यह मल सूखकर आंतों की दीवारों में चिपकने लगता है, जिससे कब्ज, गैस, पेट फूलना, बदहजमी और शरीर में विषैले तत्वों के जमाव जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यदि इस स्थिति को लंबे समय तक नजर अंदाज किया जाता है, तो यह अन्य कई बीमारियों का कारण भी बन सकती है।

आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार, शरीर में किसी भी रोग का मूल कारण विषाक्त पदार्थों का संचय होता है। जब हम प्रकृति के नियमों के विरुद्ध जीवन जीते हैं, जैसे कि अनियमित भोजन करना, पर्याप्त पानी न पीना, शारीरिक श्रम न करना और मानसिक तनाव में रहना, तो शरीर में अपशिष्ट पदार्थ सही ढंग से बाहर नहीं निकल पाते। यही अपशिष्ट धीरे-धीरे आंतों में जमा होकर मल के चिपकने की समस्या को जन्म देते हैं। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह समस्या केवल पाचन तंत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे शरीर के असंतुलन का संकेत है।

इस समस्या के कई प्रमुख कारण होते हैं। सबसे पहला और महत्वपूर्ण कारण है पानी की कमी। जब शरीर को पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिलता, तो मल सूखकर कठोर हो जाता है, जिससे उसका बाहर निकलना कठिन हो जाता है। दूसरा कारण है फाइबर युक्त भोजन की कमी। आजकल लोग अधिकतर प्रोसेस्ड पैकेट बन्द और जंक फूड का सेवन करते हैं, जिसमें फाइबर की मात्रा बहुत कम होती है। फल, सब्जियां और साबुत अनाज की कमी से आंतों की सफाई ठीक से नहीं हो पाती। इसके अलावा, तला-भुना और अधिक मसालेदार भोजन आंतों में चिपचिपाहट पैदा करता है और पाचन क्रिया को धीमा कर देता है।

शारीरिक गतिविधि की कमी भी इस समस्या को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आधुनिक जीवनशैली में लोग अधिक समय बैठकर काम करते हैं और व्यायाम के लिए समय नहीं निकाल पाते। इससे आंतों की गति धीमी हो

जाती है और मल का निष्कासन प्रभावित होता है। इसके साथ ही, अनियमित दिनचर्या जैसे देर रात तक जागना, समय पर भोजन न करना, आधुनिकता की रेश में पैसों के पीछे रात-दिन भागना और पर्याप्त नींद न लेना भी पाचन तंत्र को कमजोर करता है। कई लोग मल त्याग की प्राकृतिक इच्छा होने पर भी अनदेखा कर देते हैं, जिससे यह समस्या और अधिक गंभीर हो जाती है।

इस समस्या के समाधान के लिए सबसे पहले शरीर की प्राकृतिक प्रक्रियाओं को पुनः सक्रिय करने पर जोर दिया जाना आवश्यक होता है। जल चिकित्सा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सुबह उठकर 2 से 3 गिलास गुनगुना पानी पीने से आंतों की गति सक्रिय होती है और मल त्याग में आसानी होती है। यह शरीर को अंदर से साफ करने का एक सरल और प्रभावी उपाय है। दिनभर पर्याप्त मात्रा में पानी पीना भी आवश्यक है, जिससे शरीर में नमी बनी रहती है और मल कठोर नहीं होता।



आंतों में मल जमने के क्या लक्षण होते हैं

समुचित खान-पान भी इस समस्या के समाधान का एक महत्वपूर्ण भाग है। आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार, हमें अपने भोजन में अधिक से अधिक प्राकृतिक और ताजे खाद्य पदार्थ शामिल करने चाहिए। कच्चे फल और सब्जियां, जैसे पपीता, सेब, अमरुद, गाजर और खीरा आंतों की सफाई में सहायक होते हैं। हरी पत्तेदार सब्जियां और अंकुरित अनाज, दही, छाछ पाचन शक्ति को बढ़ाते हैं और शरीर को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, तला-भुना, मैदा, चीनी और पैकेट वाले खाद्य पदार्थों से दूर रहना चाहिए, क्योंकि ये पाचन तंत्र को कमजोर करते हैं और आंतों में विषैले तत्वों के संचय को बढ़ाते हैं।

आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा में उपवास को भी बहुत महत्व दिया गया है। सप्ताह में एक दिन केवल फलाहार या जूस लेने से शरीर को पाचन से आराम मिलता है और वह अपनी ऊर्जा का उपयोग आंतरिक सफाई के

लिए कर पाता है। यह प्रक्रिया शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करती है और पाचन तंत्र को पुनः स्वस्थ बनाती है। हालांकि, उपवास करते समय सावधानी बरतना आवश्यक है और इसे अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार ही करना चाहिए।

मिट्टी चिकित्सा भी एक प्रभावी और सरल उपाय है। पेट पर गीली मिट्टी की पट्टी लगाने से आंतों की गर्मी कम होती है और पाचन क्रिया में सुधार होता है। यह शरीर से विषाक्त तत्वों को बाहर निकालने में भी सहायक होती है। प्राकृतिक चिकित्सा में मिट्टी को एक शक्तिशाली उपचार माध्यम माना गया है, जो शरीर को ठंडक और संतुलन प्रदान करती है।

योग और प्राणायाम भी इस समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पवनमुक्तासन, भुजंगासन और वज्रासन जैसे योगासन आंतों की गति को सुधारते हैं और पाचन तंत्र को मजबूत बनाते हैं। प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम और कपालभाति शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाते हैं और पाचन प्रक्रिया को सक्रिय करते हैं। नियमित रूप से योग करने से न केवल पाचन तंत्र मजबूत होता है, बल्कि मानसिक तनाव भी कम होता है, जो इस समस्या का एक अप्रत्यक्ष कारण है।

सही दिनचर्या अपनाना भी अत्यंत आवश्यक है। सुबह जल्दी उठना, नियमित समय पर भोजन करना, पर्याप्त नींद लेना और मल त्याग का एक निश्चित समय बनाना पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करता है। इसके साथ ही, भोजन को अच्छे से चबाकर खाना चाहिए, ताकि पाचन प्रक्रिया आसानी से हो सके। जल्दी-जल्दी खाने और भोजन के दौरान पानी पीने की आदत से बचना चाहिए।

प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार, शरीर में स्वयं को ठीक करने की अद्भुत क्षमता होती है। हमें केवल उसे सही वातावरण प्रदान करना होता है, जिसमें शुद्ध आहार, स्वच्छ जल, ताजी हवा, पर्याप्त धूप और संतुलित जीवनशैली शामिल है। जब हम इन प्राकृतिक नियमों का पालन करते हैं, तो शरीर स्वतः ही अपने अंदर जमा विषैले तत्वों को बाहर निकाल देता है और स्वस्थ बना रहता है।

आंतों में मल का चिपकना कोई स्वतंत्र बीमारी नहीं है, बल्कि यह हमारे गलत जीवनशैली और खानपान का परिणाम है। यदि हम समय रहते अपने आहार और दिनचर्या में सुधार करें और आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धांतों को अपनाएं, तो इस समस्या से आसानी से बचा जा सकता है। यह न केवल हमारे पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है, बल्कि पूरे शरीर को ऊर्जावान और रोगमुक्त बनाए रखने में भी सहायक होता है।

HOW TO ESTABLISH AS A GRAHSTHI

BY B.R.SHARMA VIBHAKAR

There are four ashramas as Brahmcharya, Grahstha, Vanprastha & sanyas in the vedic system of living. Our Vedic philosophers being practical men have already thought over the partitions of our life's time. The above mentioned gradation deals with inner joy.

Life is a journey we already know. How to maintain this journey joyous and happy? This is the question which is to be answered in the light of our Ashram living.

First of all you have to become a man and man means to catch up thinking process to act what the righteousness is, to behave what the betterment is to others is so on and so forth to test your credibility in the society. Certainly, you are a human being which differs from other living ones.

You take birth in a family and you are brought up by your parents adopting certain skills to mould favourable to you at

all times when your childhood begins. Their love sympathy, affection wrapped up with aesthetic sense give you turnings to prepare you physically, mentally spiritually and socially. All the impressions you catch in a normal way. You become a part and parcel of your family. In other words you are a member of society. At the age of 25 years you become a good thinker, a good contemplator. You discern the good from the evil. If you do good, you will be esteemed. you understand the etiquette, you understand your responsibilities for your parents, for the neighbours and for the nation. You may become patriot filled with utmost feelings to your country. What a philanthropic idea you stage up. Really over the age of 21, you are physically and mentally ripened. Under 21 your decisions may mislead you. The changes of your body and brain will tell you all. So at the age

of 25 you are perfectly capable for the age to get married and produce children. Female body demands the limit of 16 to 18 years of age on medical ground.

Secondly, it is proper on your part when you are employed or do some business of your own and your Conscience declares you to be a source of independently earnings to maintain your Grahstha Ashram with skillful handlings. Then you are respectable in the society and dexterious to conduct your own family. It means you have learnt lore (vidya) of how to earn and how to spend. You might have undergone the Brahmacharya Ashram first and prepared yourself well because of your tactics of knowledge and experience. Only you have to learn how to overcome the sexual urge and let it flow in constructive channels of life. This can be the mental level at the age of maturity that is 25 years.

धियो यो नः प्रचोदयात्

- डॉ. धर्मानन्द शर्मा, वैदिक शोध संस्थानम्, पंजाब विश्वविद्यालयः होशयारपुरम् (पंजाब)

पुरावृत्तानुसन्धानपरम्परायां विशिष्यते खलु देवशास्त्रम्। सुकीर्णकालाधिगम्यतेऽविच्छिन्नाऽक्षुण्णा चास्य चिन्तन परम्परा। चाक्षुषपदार्थेषु चैतन्याभिमानं दैवत्वरोपणं चास्य वैशिष्ट्यम्। यः केऽपि पदार्थः प्रभवयति मानवजीवनं हिताहितप्रतिविधानेन स स्तूयते गीयते चवैदिक ऋषिभिः। तेन हि पृथिव्याकाशनदीनदपर्वतादयः सर्वे सर्गपदार्थाः देवत्वमाधाना उपासनायोग्यत्वमगच्छन्। मानवीकरणं चेतनीकरणं चैतदार्थाणां वैदिकदेवतावादस्य विशिष्टं लक्षणं मन्यते मनीषी **मैकडानलः**।

महीयते खलु वैदिकवागमये सवितुः स्थानम्। सवितादेव एव द्विजैरनुष्ठीयमानेषूपनयनसंस्कारेषु गुरुमन्त्रत्वेनानुश्रूयते। प्रथितोऽद्यापि गायत्रीमन्त्रः सर्वकार्येषु सवितारं स्तूयमानः। भौतिकपिण्डोऽयं कालान्तरे धातुनेतृशब्दवद् व्यावहारिकशक्तिरूपेणाभ्युपगच्छन्वलोक्यते। परम्परा प्रसादात् प्रमादादज्ञानाद्वयं सूर्यस्य पर्यायत्वेन विशेषणत्वेन च प्रयुज्जानो दृश्यते। भ्रान्तिविलसितमिदं सवितासूर्यसमीकरणं नूनं सर्वथा न मर्षणीयम्। न सविता नाम कश्चिद् धर्मो गुणो वा कश्चित्पदार्थविशेषस्य। पदार्थान्तरवत्सविताऽपि स्वतन्त्र एवास्ति प्राकृतिकः पिण्डः।

वस्तुतः कोऽसौ पुनः सविता? नायं प्रश्नः सर्वथाऽचर्चितपूर्वः। न तथापि चराचरत्वेन याथातथ्येनाधिगतावितथस्वरूपः। प्रायेण भाष्यकाराः सवितारं सूर्यस्य विशेषणत्वेन पर्यायत्वेन चाभ्युपगम्यमाना दृश्यन्ते। परंच सविता विषयकान् मन्त्रानालोच्यं सुव्यक्तं भवति, यन्नायं कथमपि सूर्यः। न ह्यास्य कथमपि सर्वथा संवादः सूर्येण। नूनमस्ति द्वयोः किञ्चिदनतिक्रमणीयं साम्यम्। तदेव साम्यं समीक्ष्य प्राचीनैर्भाष्यकारैस्तेषामेव पन्थानमनुसरिद्विराधुनिकैश्चापि समीक्षकैः सविता सूर्ययोरभेदः साधितः। प्रकाशकत्वं गतिशीलत्वं चोभयोः समानो

गुणः। द्वयोरेव च प्रेरणा पणेन जगदिदं प्राणि व्यूहश्चात्रत्यो विविधेषु व्यापारान्तरेषु व्यापृतो भवति। यश्चास्ति द्वयोः प्रकृतिगतं वैषम्यं न तदनल्पम्। सदैव वैषम्यं विभाव्य केचन विद्वानसो द्वित्रा एव किमपि तर्कयन्ति सर्वथऽतर्कितपूर्वम्। अनुपेक्षणीय वचनानां तेषामप्रतिहतवचांसि नूनं ध्यातव्यानि सानुग्रहधिया धीधनिभिरनुसन्धित्सुभिः। पूर्वापरमन्त्राकलनसाकल्येन परीक्ष्य तत्रत्यं तत्त्वं तन्मत एव बद्धपक्षपातोऽहं तत्पक्षक्षोदाय मोदाय चाभिनवानुसन्धित्वपूर्णां किमपि प्रमाणत्वेन विनिवेदयामि।

1. निखिलेऽपि वैदिकवाङ्मये सूर्यस्य दिवाप्रकाशकत्वेन सवितुश्च रात्रिप्रकाशकत्वेन स्तुतयो दृश्यन्ते। (ऋग्वेदे - 1-35-1, 1-35-10, 2-28-4 इत्यादिमन्त्रेषु) तेन च सूर्यो द्युपतिः, सविता च निशापतिः। सवितुश्च कुत्रचिन्नक्तं दिवं प्रकाशोऽपि श्रूयते न पुनः सूर्यस्य क्वचिद् रात्रिप्रकाशत्वम् अवलोक्यते। अस्तं गतेऽति सूर्ये न सविताऽस्तमेति स तु सूर्यप्रकाशाभावे मार्गं दिशति प्राणिनः (ऋग्वेदे 2-83-3, 1-35-2, 27-76-1, 5-82-8 इत्यादिषु)।

2. विशिष्यते हि सविता 'अमति' इति विशेषणविशेषेण। विशेषणनानेन सवितुः प्रकाशस्य विश्रान्तिविरहत्वमुपपद्यते न पुनः सूर्यस्य प्रकाशे तत् तथा। न सूर्यप्रकाशो विश्रान्तिरहितः। गुणेनानेन भिद्यते सर्वथा सविता सूर्यात्। अन्तरिक्षवैज्ञानिका अपि समर्थयन्ति सूर्यप्रकाशस्य विश्रान्तिधर्मत्वम्। अपरत्र च सविता स्तूयते 'अमति' शक्तिमाधानः। शक्तिरेषा विभिन्नकालं सवितुः प्रकाशस्योदयास्तित्वं द्योतयति। क्षणमुदयं क्षणं चास्तं प्रतिदिशन् सविता नूनमद्भुतो विभर्ति गुणः।

3. सूर्यरश्मीनां 'ध्रुवासः' इति विशेषणं सवितुश्च 'गभीरवेपा' इति। 'ध्रुवासः' इति विशेषणं तु सूर्यरश्मीणां निष्कम्पकत्वमाख्यापयति।

'गभीरवेपा' च सवितुः रश्मीनां स्पन्दनत्वं कम्पनत्वं वा प्रथयति। एकस्मिन् निष्पदनत्वमपरस्मिन् च सर्वथा निश्चलत्वमिति सुतरां भिद्यते द्वयोर्गुणधर्मः।

4. श्रूयन्ते हि सूर्यस्य सप्ताशवाः (ऋग् 5-45-9 इत्यादिषु) ये खलु नयन्ति तद्रथमवितरतम्। सवितुश्च द्वावेवाश्वौ प्रायेण सर्वत्र श्रूयते। (ऋग् 1-35-5) तौ च श्वेतचरणैः सवितुः द्विरावृत्तं रथं नयतः। सुतरां भिद्यते द्वयोः रथस्य स्वरूपं संख्यां चाश्रवानां गतिरध्वानं च।

5. 'अष्टो व्याख्यात्कृभः' (ऋग् 1-35-8) इति मन्त्रेण ज्ञायते यत् सविता भूभागतोऽत्यन्तं समीपं राजते। त्रियोजनमतिक्रम्य तस्य रश्मयो भुवि पतन्ति। सूर्यस्य शतयोजनदूरादापतन्ति रश्मयः।

तदेवं सन्ति शतशः प्रमाणानि। यानि द्वयोः सुतरां साधयन्ति भेदम्। कोऽयं पुनरसौ प्राकृतः पिण्डो यो हि पुण्यश्लोकैरस्माकं पूर्वपुरुषैः ऋषिभिः साक्षात्कृतः। साक्षात्कृतधर्माणो हि ते कं पदार्थं साक्षात्कृत्य स्तुवन्ति स्म। अस्तु, भो! नहं किमप्यभिनवमुन्मिषामि। राँथामहोदयेन त्वस्य तुलना ग्रीकस्य 'हर्मैसात्' कृता यो हि योजयति अहोरात्रसम्बन्धः। न चात्रानुपेक्षणीयवचनः **सुव्वैवा** महाभागोऽपि यस्तु योजयति सम्बन्धोऽस्य 'अरोरा' उपग्रहविशेषात्। स एव कारणं उत्तरी ध्रुवस्य षट्मासदीर्घनिशाव्यापाराणाम्। वचनस्त्वत्रावधेयं मनीषिणो बालगंगाधरतिलकस्यापि। तन्मते उत्तरीध्रुवप्रान्तादेवार्वाः भारतं सम्प्राताः। तत्रैव साक्षात्कृतोऽयं सवितादेव किं 'अरोरा' एव? यस्य धनुषाकारः। प्रकाशविम्बो घोटकद्वयमिव प्रतिभाति दर्शकाणाम्। अन्यो वा कश्चिद्विचारितपूर्वो नूनं विचारार्हो विचारविद्धिः। अन्ते च तत्सवितुः प्रकाशाय 'धियो यो नः प्रचोदयात्' इति कामयमानोऽहं सविता स्वरूपानुसन्धानाय सवितरमेव नैमि स्तौमि च।

- भारतोदयः से साभार

आर्य समाज दादों, अलीगढ़ का 74वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

आर्य समाज दादों (अलीगढ़), का 74वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न। यह तीन दिवसीय समारोह सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यक्रम की श्रृंखला में वैदिक संदेशों और भजनों की गूंज के साथ उत्साह के वातावरण में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। वार्षिकोत्सव समारोह में मुख्य रूप से उपदेशिका रीमा आर्य, कवि अजीत सिंह अंजान, भजन उपदेशक कप्तान सिंह आर्य तथा जयवीर सिंह जी के भजन एवं प्रवचनों की धूम रही।

कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने अत्यंत प्रभावशाली शब्दों में वैदिक ज्ञान की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा कि वेद केवल प्राचीन ग्रंथ नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए अमर, सार्वभौमिक और दिव्य ज्ञान के स्रोत हैं। वेदों में निहित सिद्धांत "सत्यं वद, धर्मं चर" तथा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" हमें यह प्रेरणा देते हैं कि हम स्वयं सत्य का आचरण करें और सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लें।

वेद मनुष्य को अज्ञानता, अंधविश्वास और कुरीतियों के अंधकार से निकालकर ज्ञान, विवेक और विज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। वैदिक विचारधारा यह सिखाती है कि ईश्वर एक है, निराकार है, सर्वव्यापक है और न्यायकारी है। अतः मनुष्य को किसी प्रकार के पाखंड या मिथ्या आडम्बरों में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। यजुर्वेद का संदेश "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा" त्याग और संयम का मार्ग दिखाता है, जबकि ऋग्वेद का "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः" हमें सभी दिशाओं से श्रेष्ठ विचारों को ग्रहण करने की प्रेरणा देता है।



वक्ताओं ने इस बात पर विशेष बल दिया कि वेदों के अनुसार जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक उन्नति नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति, सामाजिक कल्याण और नैतिक जीवन का निर्माण भी है। वैदिक सिद्धांत "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को सुदृढ़ करते हुए उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण मानव समाज एक परिवार है, और हमें परस्पर प्रेम, सहयोग और सद्भाव के साथ जीवन जीना चाहिए।

इस वार्षिकोत्सव के माध्यम से समाज में वैदिक संस्कृति को सशक्त बनाने का जो प्रयास किया जा रहा है, वह अत्यंत सराहनीय और प्रेरणादायक है। ऐसे आयोजन न केवल लोगों को अपनी जड़ों से जोड़ते हैं, बल्कि नई पीढ़ी में नैतिक मूल्यों, अनुशासन और संस्कारों का संचार भी करते हैं। अंततः वक्ताओं ने सभी उपस्थित जनों से आह्वान किया कि वे वेदों के सिद्धांतों को केवल सुनें ही नहीं, बल्कि उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करें। जब प्रत्येक व्यक्ति सत्य, धर्म और

नैतिकता के मार्ग पर चलेगा, तभी एक सशक्त, जागरूक और आदर्श समाज का निर्माण संभव हो सकेगा। ओ३म्।

समापन समारोह में सर्वश्री भरत सिंह राजपूत, भजनानंद सरस्वती, पूरन सिंह बृह्मचारी, महेन्द्र सिंह आर्य, भगत सिंह आर्य, रूप सिंह आर्य, शिशुपाल आर्य, प्रेमपाल सिंह आर्य, चन्द्रपाल सिंह आर्य, जवाहर सिंह आर्य, सरनाम सिंह आर्य, अजब सिंह आर्य, हेम सिंह आर्य, गजराज सिंह आर्य, भरत सिंह आर्य, रामप्रकाश, संजय आर्य, पवन आर्य, जगदीश आर्य, जिला पंचायत सदस्य मुकेश यादव, प्रधान रामेश्वर सिंह यादव, गजेंद्र सिंह, सत्यपाल आर्य, मनवीर सिंह आर्य, बृजेश आर्य, उमेश आर्य, रवि आर्य, दर्शन माहेवरी, गोविंद आर्य आदि लोग मौजूद रहे।

समारोह का मंच संचालन आर्य समाज नवी करीम, सदर बाजार, दिल्ली के धर्माचार्य श्री ऋषिपाल शास्त्री जी ने बड़ी ही कुशलता के साथ किया। कार्यक्रम के अन्त में आर्य समाज दादों के प्रधान श्री भगत सिंह जी ने आगन्तु अतिथियों एवं आर्यजनों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में समाज के मंत्री श्री रूप सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री यशपाल सिंह तथा सभी सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम करके सफल बनाया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अन्त में ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसे सभी महानुभावों ने ग्रहण किया।

ग्राम-साहपुर, जिला-अमरोहा (उ० प्र०) में त्रिदिवसीय यजुर्वेद परायण महायज्ञ भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न



उत्तर प्रदेश के अमरोहा जनपद स्थित ग्राम साहपुर में परम श्रद्धेय स्वामी सुमित्रानन्द जी (मास्टर मानसिंह जी) के पावन संकल्पानुसार उनके परिवारजनों के सहयोग से दिनांक 28, 29 एवं 30 मार्च, 2026 को त्रिदिवसीय यजुर्वेद परायण महायज्ञ अत्यंत श्रद्धा, शुद्धता एवं वैदिक मर्यादाओं के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस महायज्ञ के ब्रह्मा के रूप में पूज्य स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी ने अपना गरिमामय मार्गदर्शन प्रदान किया। यज्ञ के अंतर्गत सामवेद पाठ द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल, देहरादून

की विदुषी आचार्या मीनाक्षी जी तथा उनकी शिष्या ब्रह्मचारिणी कुमारी सृष्टि जी द्वारा अत्यंत शुद्ध, मधुर एवं मंत्रोच्चारण की पूर्णता के साथ सम्पन्न किया गया।

यज्ञ के मध्य-काल में स्वामी सोम्यानन्द जी ने समय-समय पर वैदिक मंत्रों की गूढ़ व्याख्या करते हुए त्रैतवाद, सृष्टि की उत्पत्ति, वैदिक समाज व्यवस्था, कर्मफल सिद्धान्त तथा आर्य समाज के महान उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

उन्होंने उपस्थित जनसमूह को अवैदिक कुप्रथाओं एवं अंधविश्वासों का परित्याग कर सत्य, धर्म और वैदिक मार्ग को अपनाने का प्रेरणादायक संदेश दिया।

महायज्ञ के सफल आयोजन हेतु संयोजक स्वामी सुमित्रानन्द जी ने समस्त उपस्थित श्रद्धालुओं एवं सहयोगकर्ताओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए सभी को



धन्यवाद ज्ञापित किया।

यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरांत सामूहिक भण्डारे (भोजन) का भी भव्य आयोजन किया गया, जिसमें समस्त श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। अंत में समस्त वातावरण "वेदों की जय" एवं "ऋषियों की जय" के उद्घोषों से गुंजायमान हो उठा, जिससे समस्त आकाश मंडल आध्यात्मिक आनंद से परिपूर्ण हो गया।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें



आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :-
www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटारें -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

गुरुकुल विश्वभारती भैयापुर लाढौत, रोहतक में नये सत्र के शुभारम्भ के अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी एवं प्रेरणादायक उद्बोधन



गुरुकुल विश्वभारती भैयापुर, लाढौत, रोहतक के नये सत्र का शुभारम्भ 9 अप्रैल, 2026 को एक विशेष कार्यक्रम के द्वारा किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त विशिष्ट अतिथि श्री धर्मपाल मलिक पूर्व निदेशक रेडियो स्टेशन रोहतक की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। इनके अतिरिक्त गुरुकुल के संस्थापक ब्र. हरिदत्त उपाध्याय, गुरुकुल के निदेशक आचार्य नन्दकिशोर, गुरुकुल के प्रधानाचार्य श्री संजय कौशिक, गुरुकुल के मुख्यअधिष्ठाता श्री नन्दलाल शास्त्री, जीवनदानी कार्यकर्ता श्री प्रवीण नैष्ठिक, संगीतज्ञ श्री रामअवतार पुरुषार्थी आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को उपनयन संस्कार, वेदारम्भ संस्कार पिता का पुत्र को उपदेश एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य आदि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली और

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में बहुत बड़ा अन्तर है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में मुख्यरूप से ब्रह्मचारी अर्थात् विद्यार्थी पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी के बदले सुविधाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में प्रारम्भ से ही संस्कारों पर जोर दिया जाता है। किन्तु वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम पर जोर दिया जाता है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी को प्रारम्भ से ही श्रम करने, कठोर जीवन जीने एवं तपस्वी बनने की प्रेरणा व अभ्यास कराया जाता है। जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इन बातों का लेश मात्र भी समावेश नहीं है। बच्चे का निर्माण माता-पिता के कुल और उसके पश्चात् गुरु के कुल में होता है। इसीलिए गुरुकुल का आचार्य माता-पिता के समक्ष विद्यार्थी को गुरुकुल में प्रवेश देने के बाद घोषणा करता है कि अब इस बच्चे के लालन-पालन एवं शिक्षा-दीक्षा का दायित्व मैं लेता हूँ और मैं इसे अपने गर्भ में धारण करता हूँ, अर्थात् जिस प्रकार माता बच्चे को अपने गर्भ में सुरक्षित और संरक्षित रखती है और पालन-पोषण करती है, उसकी परवरिश करती है उसी प्रकार मैं भी इसकी परवरिश करूंगा। आचार्य की यह संकल्प व्यक्त करता है कि मैं बच्चे के मन और हृदय को अपने मन और हृदय से जोड़ता हूँ अर्थात् इसके मन में अच्छे विचार और हृदय में अच्छी भावनाएँ भरने का कार्य मैं करूंगा। प्रश्न उठता है कि क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली में एक अध्यापक या प्रधानाध्यापक या प्राचार्य इस प्रकार का संकल्प या इस प्रकार का दायित्व लेता है। उत्तर है - नहीं। स्वामी आर्यवेश जी ने ये सब बातें कहने के बाद ब्रह्मचारियों से आग्रह किया कि वे अब तपस्वी बनें, विलासिता का जीवन त्यागें, दिन में न सोयें और प्रतिदिन का कार्य नियमित रूप से करें। आज का कार्य कल पर न छोड़ें। ब्रह्मचर्य का पूरी तरह से पालन करें। अपने गुरुजनों का सम्मान एवं आदर श्रद्धा के साथ करें और उनसे अधिक से अधिक ज्ञान ग्रहण करने का प्रयत्न



करें। परिश्रमी बनें, तपस्वी बनें और कठोर जीवन जीने का प्रयास करें। इससे तुम्हारी जीवन की नींव मजबूत बनेगी और पूरे जीवनभर तुम्हें किसी भी परिस्थिति में निराश नहीं होना पड़ेगा। स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरुकुल का विद्यार्थी कभी भी जीवन में असफल नहीं हो सकता। वह सदैव सफलता की ओर आगे बढ़ता है। अतः गुरुकुल में आने के बाद आपका आत्मबल मजबूत हो जाना चाहिए और आप अपने ऊपर गर्व करें कि हम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में पढ़ रहे हैं जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण और महर्षि दयानन्द सरस्वती पढ़ें। स्वामी आर्यवेश जी के बाद श्री धर्मपाल मलिक ने भी अपने अनुभव विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किये।

अन्त में आचार्य नन्दकिशोर जी ने धन्यवाद देते हुए विद्वानों से आग्रह किया कि वे समय-समय पर गुरुकुल में पधारकर ब्रह्मचारियों को प्रेरणा देते रहें। कार्यक्रम बहुत ही शिक्षा वर्द्धक रहा।

स्व० श्री ईश्वर सिंह तोमर सुपुत्र श्री जगराम सिंह तोमर की 51वीं पुण्य तिथि के अवसर पर दिवंगत बुजुर्गों को श्रद्धांजलि देने के लिए स्मृति दिवस यज्ञ का आयोजन एवं आर्य समाज धर्मशाला, पट्टी चौधरान, बड़ौत में यज्ञशाला का लोकार्पण दिनांक 21 मार्च, 2026, स्थान-किसान सदन (लाल हवेली) कोताना रोड, बड़ौत (उ०प्र०)



गत 21 मार्च, 2026 को श्री साहब सिंह तोमर, श्री रणवीर सिंह तोमर, श्री अशोक कुमार तोमर, डॉ. नेपाल सिंह तोमर, डॉ. तेजपाल सिंह तोमर, श्री हरपाल सिंह तोमर एवं समस्त परिवार की ओर से अपने दिवंगत बुजुर्गों स्व. श्री ईश्वर सिंह तोमर सुपुत्र श्री जगराम सिंह तोमर की 51वीं पुण्य तिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि देने के लिए स्मृति यज्ञ का भव्य आयोजन अपने निवास स्थान किसान सदन (लाल हवेली), कोताना रोड, बड़ौत, उत्तर प्रदेश में आयोजित किया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्र के सैकड़ों गांव से पधारे प्रमुख लोगों ने आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, चांदपुर बिजनौर से विधायक स्वामी ओमवेश जी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी, पूर्व भारत के श्री पहलवान सुभाष आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी एवं डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए दिवंगत बुजुर्गों को श्रद्धांजलि अर्पित की

और उपस्थित जनसमूह का आह्वान किया कि वे बुजुर्गों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त करें। यज्ञ उपदेश आदि के उपरान्त प्रीति भोज की समुचित व्यवस्था की गई थी और उसके पश्चात् मध्याह्न 2 बजे आर्य समाज धर्मशाला, पट्टी चौधरान बड़ौत में परिवार की ओर से निर्मित करवाई गई यज्ञशाला के लोकार्पण का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यज्ञशाला के लोकार्पण के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं चांदपुर के विधायक स्वामी ओमवेश जी विशेष रूप से उपस्थित रहे और उन्होंने यज्ञशाला की नामपट्टिका का अनावरण किया तथा रिबन काटकर यज्ञशाला का लोकार्पण किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का सारगर्भित व्याख्यान यज्ञ एवं यज्ञशाला के महत्त्व पर हुआ जिसे उपस्थित श्रोताओं ने बड़ी श्रद्धा के साथ सुना। यज्ञशाला के लोकार्पण के

अवसर पर आर्य समाज बड़ौत के प्रभारी मंत्री डॉ. ओमवीर सिंह तोमर, जिला सभा के प्रधान श्री राजेन्द्र सिंह आर्य, पूर्व प्रधान श्री ब्रह्मपाल आर्य, उ० प्र० सभा के अन्तरंग सदस्य श्री अवनीश आर्य, श्री धर्मेन्द्र आर्य छपरौली, प० धन कुमार आर्य निरपुणा, श्री राजगुरु आर्य गोराना, मा० सोहनपाल आर्य-बड़ौली, डॉ. महक सिंह आर्य-लोहारी, श्री विक्रम सिंह आर्य-आदर्श नगला, श्री हरपाल आर्य-निरपुणा आदि भी उपस्थित रहे। इस पूरे कार्यक्रम के सूत्रधार स्व० श्री ईश्वर सिंह जी के सुपुत्र श्री हरपाल सिंह तोमर एवं संयोजक श्री वीरेन्द्र राणा ने सभी आगन्तुक महानुभावों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम विधिवत रूप से सम्पन्न हुआ।



प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतेक्यता होना अनिवार्य नहीं है।